बीएफडीआई–073: फैशन उद्योग का परिचय जुलाई 2026
बीएजी / बीएससीजी कार्यक्रम के लिए कोशल संवर्द्धन पाठयक्रम
कोर्स कोडः BFDI-073

देय तिथिः अक्टूबर 31, 2026

अधिकतम अंकः 50
मार्क्स वेटेजः 30%

भाग।

प्रश्न 1- उदाहरण सहित वर्तमान परिदृश्य में भारतीय फैशन उद्योग के विकास पर चर्चा कीजिए। (10 अंक)

प्रश्न 2- निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: (5x2=10 अंक)

(a) विस्कोस रेयॉन के गुणधर्म

(b) मनीष अरोरा

प्रश्न 3- फैशन मार्केटिंग से आपका क्या तात्पर्य है? एसटीपी प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। (10 अंक)

भाग॥

केस स्टडी/गतिविधि

प्रश्न 4- किसी एक महिला एवं बच्चों के फैशन रिटेल आउटलेट के 2026 के समर कलेक्शन के संदर्भ में एक सारांश रिपोर्ट तैयार कीजिए।

(20 अंक)

प्रश्न 1- उदाहरण सहित वर्तमान परिदृश्य में भारतीय फैशन उद्योग के विकास पर चर्चा कीजिए। (10 अंक)

उत्तर

भारतीय फैशन उद्योग कपड़े बनाने तक सीमित नहीं है। इसमें वस्त्र निर्माण, डिजाइन, रंगाई-छपाई, कढ़ाई, फुटवियर, आभूषण, ब्रांडिंग, खुदरा बिक्री और ऑनलाइन व्यापार शामिल हैं। भारत में फैशन की पहचान परंपरा तथा आधुनिकता के मेल से बनी है। बनारसी साड़ी, चिकनकारी, बंधेज, कांजीवरम, खादी और हस्तकरघा जैसे रूप लंबे समय से लोकप्रिय हैं। आज यही विरासत नए कट, रंग, उपयोग और प्रस्तुति के साथ युवाओं तक पहुँच रही है।

परंपरा से आधुनिक उद्योग तक

स्वतंत्रता से पहले भारतीय पोशाक का बड़ा भाग स्थानीय कारीगरों और घरेलू बुनकरों के माध्यम से तैयार होता था। स्वतंत्रता के बाद संगठित कपड़ा मिलों, रेडीमेड वस्त्रों और बड़े बाजारों का विस्तार हुआ। 1990 के दशक के आर्थिक उदारीकरण के बाद विदेशी ब्रांड, शॉपिंग मॉल, फैशन पत्रिकाएँ और नए डिजाइन संस्थानों का प्रभाव बढ़ा। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे संस्थानों ने डिजाइन तथा उत्पादन के लिए प्रशिक्षित पेशेवर तैयार किए। घरेलू डिजाइनरों ने भारतीय शिल्प को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया।

उदाहरण के लिए, सब्यसाची मुखर्जी की डिजाइन भाषा पारंपरिक बुनाई, शिल्प और विवाह परिधानों को आधुनिक लग्जरी बाजार से जोड़ती है। मनीष मल्होत्रा ने फिल्मी परिधानों और उत्सव-वस्त्रों के माध्यम से डिजाइनर फैशन की लोकप्रियता बढ़ाई। दूसरी ओर, स्थानीय दर्जी तथा छोटे बुटीक भी अलग माप, अवसर और रुचि के अनुसार कपड़े बनाकर इस उद्योग का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं।